



جامعہ ملیہ اسلامیہ
जामिया मिल्लिया इस्लामिया



प्रिय महोदय/ महोदया

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय पिछले तीन वर्षों से देश के अलग-अलग विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित विषयों पर भारतीय भाषाओं में संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। अब तक हमने हिन्दी, कन्नड़ और पंजाबी आदि भाषाओं में विभिन्न मुद्दों पर संवाद आयोजित किए हैं। 'शिक्षा के सरोकार' नामक इस शृंखला की अगली संगोष्ठी 'भाषा-शिक्षण' से जुड़े मुद्दों पर उर्दू-हिन्दी में 9, 10 और 11 अक्टूबर, 2020 को आयोजित कर रहे हैं। यह संगोष्ठी **डिपार्टमेंट ऑफ़ टीचर ट्रेनिंग एण्ड नॉन फॉर्मल एजुकेशन(IASE), फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया,दिल्ली** और **अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बंगलूरु** के संयुक्त आयोजन में हो रही है। संगोष्ठी जामिया मिल्लिया इस्लामिया,दिल्ली में होगी।

संगोष्ठी का आधार-पत्र इस मेल के साथ संलग्न है। हम आशा करते हैं कि इस आधार-पत्र में उल्लेखित किसी न किसी मुद्दे पर आलेख भेजकर आप अवश्य इस संवाद में शामिल होने पर विचार करेंगे। आलेख उर्दू या हिन्दी में भेजे जा सकते हैं।

कृपया आलेख भेजने से पहले आप हमें आलेख का एबस्ट्रैक्ट भेज दें। एबस्ट्रैक्ट और आलेख आदि भेजने की अन्तिम तिथियों का ब्योरा आधार-पत्र में है।

इस मेल के साथ संलग्न आधार-पत्र को आप अन्य इच्छुक और संभावित प्रतिभागियों के साथ साझा करेंगे तो हमें खुशी होगी।

सादर,

- **गुरजीत कौर**, प्राध्यापक, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली
- **मनोज कुमार**, सहायक प्राध्यापक, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बंगलूरु

Azim Premji University, Electronics City, Hosur Road, Bengaluru, Karnataka 560 100

Department of Teacher Training & Non-Formal Education (IASE), Faculty of Education ,
Jamia Millia Islamia, Jamia Nagar, New Delhi 110 025



جامعہ ملیہ اسلامیہ
जामिया मिल्लिया इस्लामिया



शिक्षा के सरोकार-4

आधार-पत्र

भाषा-शिक्षण, विचारशीलता और सृजनशीलता

विद्यालयी शिक्षा में भाषा और साहित्य के अध्यापन पर संगोष्ठी

9 से 11 अक्टूबर, 2020 नई दिल्ली

‘शिक्षा के सरोकार’ शृंखला की चौथी संगोष्ठी *अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु* और *डिपार्टमेंट ऑफ टीचर ट्रेनिंग एण्ड नॉन फॉर्मल एजुकेशन (IASE), फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली* के संयुक्त आयोजन में दिल्ली में होगी। उल्लेखनीय है कि यह संगोष्ठी जामिया मिल्लिया इस्लामिया के स्थापना के 100 वें वर्ष के उपलक्ष्य में होने वाले आयोजनों का हिस्सा है। संगोष्ठी का विषय क्षेत्र भाषा शिक्षण, विचारशीलता और सृजनशीलता के इर्दगिर्द है।

संगोष्ठी में संवाद का माध्यम उर्दू और हिन्दी होगा।

संगोष्ठी-शृंखला की पृष्ठभूमि

पिछले कुछ दशकों में स्कूली शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार पर व्यवस्थित अकादमिक चर्चा के लिए देश के कई विश्वविद्यालयों में कई व्यापक कदम उठाए गए हैं। इनमें नए कार्यक्रमों की संरचना और मौजूदा पाठ्यक्रमों का संशोधन मुख्य हैं। हमारा यह विश्वास है कि इस तरह के पाठ्यक्रमों के संचालन से स्कूली शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर नागरिक समाज में सजगता आएगी। लेकिन साथ ही इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाने तथा इन्हें और अधिक समावेशी बनाने हेतु इन्हें भारतीय भाषाओं में भी आरम्भ करने का लक्ष्य रखना जरूरी है।

Azim Premji University, Electronics City, Hosur Road, Bengaluru, Karnataka 560 100

Department of Teacher Training & Non-Formal Education (IASE), Faculty of Education ,
Jamia Millia Islamia, Jamia Nagar, New Delhi 110 025

इसके लिए यह आवश्यक है कि भारतीय भाषाओं में विमर्श व ज्ञान-निर्माण हो व साथ ही अकादमिक साहित्य की रचना भी हो। इस दिशा में एक छोटी पहलकदमी है ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन जिनमें प्रस्तुत किए जाने वाले आलेख व उन पर विमर्श भी भारतीय भाषाओं में ही किया जाए। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय ने 'अनुवाद पहल' कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर ऐसी संगोष्ठियों के आयोजन की शृंखला आरम्भ की है।

'अनुवाद पहल' टीम का काम विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की ज्यादा बड़ी संख्या तक गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा और पढ़ने की सामग्री पहुँचाने के अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के लक्ष्य व दृष्टिकोण पर केन्द्रित है। विश्वविद्यालय का मानना है कि भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री की उपलब्धता और गुणवत्ता वाले उच्च शिक्षा कार्यक्रम होने से, अवधारणाओं और विचारों में समृद्धि आएगी।

इस क्रम में अब तक तीन संगोष्ठियाँ आयोजित हो चुकी हैं। शैक्षिक अकादमिक जगत में इनका व्यापक स्वागत हुआ है। पहली संगोष्ठी 2017 में दिल्ली में अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के साथ 'स्कूली शिक्षा के बदलते परिदृश्य में अध्यापन-कर्म की रूपरेखा' विषय पर आयोजित की गई थी। दूसरी संगोष्ठी मोहाली में 2018 में भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान मोहाली के साथ 'विज्ञान और विज्ञान शिक्षा' विषय पर और तीसरी संगोष्ठी 2019 में दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के साथ 'गणित शिक्षण : अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित की गई थी।

इन संगोष्ठियों में प्रस्तुत किए जाने वाले पर्चों में से चयनित को किताब के रूप में प्रकाशित करने की महती योजना भी है। ताकि इस विचार-विमर्श को व्यापक पैमाने पर फैलाया जा सके। पहली संगोष्ठी के चुने हुए पर्चों के दो संकलन प्रेस में हैं।

प्रस्तावित संगोष्ठी के लिए परिप्रेक्ष्य

भाषा की शिक्षा

भाषा को इन्सान, संस्कृति व समाज की रचना व उसके विकास की बुनियाद माना जाता है। यह भी स्पष्ट है कि भाषा इन सबसे अलग नहीं है और इन सबमें गुँथी हुई है। इन सबके सन्दर्भ अलग भी हैं, लेकिन आपस में गुँथे हुए भी। भाषा के बगैर हम न इन्सान पर और न ही समाज और संस्कृति पर किसी चर्चा को आगे बढ़ा सकते हैं। जब भी भाषा की चर्चा चलेगी तो इनकी बात भी होगी ही। दूसरे शब्दों में भाषा समाज और संस्कृति का गठन भी करती है और स्वयं भी इससे गठित होती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि भाषा न केवल मानव विचारों के

विकास का आधार है बल्कि मानव विचारों के अस्तित्व का आधार है। भाषा के बगैर मानवीय चिन्तन हो नहीं सकता।

शिक्षा के हर स्तर पर भाषा केन्द्रीय और खास है। विचार करना, अपने विचारों को आवाज देना, उन्हें अलग-अलग तरह से विकसित करना इन सबके लिए भाषा जरूरी है। इसके पर्याप्त प्रमाण हैं कि बच्चे अपनी भाषा (वह भाषा जो उन्होंने अपने घर में, अपने परिवेश में रहते हुए अर्जित की है) में हर तरह के विचार-विमर्श के लिए सक्षम हैं। ऐसा भी माना जाता है कि इस भाषा में वे अवधारणाओं की पुख्ता और बेहतर समझ बनाने में भी सक्षम होते हैं। उनकी खुद की भाषा में व संस्कृति के सन्दर्भ में रचित शिक्षण प्रक्रिया उनमें सीखने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास विकसित करती है।

शिक्षा के सन्दर्भ में यह भी कहा जाता है कि भाषा अभिव्यक्ति और 'शिक्षित' होने के महज 'एक माध्यम' से कहीं अधिक है। वह सिर्फ दुनिया व विचार समझने का आधार ही नहीं वरन हर इन्सान की पहचान, अस्मिता व उसकी रचना का स्रोत भी है। इस समझ का हर स्तर के भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों, शिक्षण के ढंग, बच्चों व शिक्षकों की भूमिका, कक्षा की रचना अन्य विषयों के शिक्षण में भाषा की भूमिका पर व इससे जुड़े प्रश्नों पर सोचना जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.), 2005 और 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण' पोजीशन पेपर इन सबके बारे में एक दृष्टि रखते हैं। इन्हीं के आधार पर भाषा सिखाने के पाठ्यक्रमों, पढ़ाने के ढंग, पाठ्यपुस्तकों व अन्य पुस्तकों की रचना व उनकी कक्षा में जगह, शिक्षकों की तैयारी, आकलन के तरीकों आदि की रचना हुई है। भारत के बहुभाषी परिदृश्य में लोकतान्त्रिक समावेशी शिक्षा के लिए भाषा, संस्कृति, समाज के शिक्षा के अन्तःसम्बन्ध एक खास सरोकार हैं जिन्हें गहराई से समझना जरूरी है। यह संगोष्ठी इस दिशा में बढ़ने का एक प्रयास है।

यह विमर्श व इन अन्तःसम्बन्धों के नए पहलू उभरें इसके लिए आवश्यक है कि इनके सन्दर्भ में नए-नए प्रयास किए जाएँ और उनका अध्ययन, विश्लेषण व आकलन कर इस पर समझ को आगे बढ़ाया जाए। पिछले तीन-चार दशकों में भाषा शिक्षण में कई नए प्रयास व प्रयोग किए गए हैं। एक ओर तो यह प्रयास वैचारिक स्तर पर हुए हैं और दूसरी ओर स्कूलों व वास्तविक कक्षाओं व उसकी सामग्री के साथ कई बड़े-छोटे प्रयास हुए हैं। हम इस संगोष्ठी में इन सब पर विमर्श करना चाहते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा अध्यापन

विद्यालय में हम 'पढ़ना-लिखना' सीखते हैं। आम व्यवहार की भाषा तो बच्चे पारिवारिक और सामुदायिक जीवन जीते हुए यूँ भी सीख लेते हैं, लेकिन पढ़ना-लिखना सीखने के लिए व्यवस्थित प्रयास और प्रायः स्कूल जैसी संस्था की जरूरत पड़ती है। विद्यालयी शिक्षा, खासकर प्राथमिक-शिक्षा की यह आम समझ है। शिक्षित व्यक्ति को आम बोलचाल में 'पढ़ा-लिखा' व्यक्ति कहा जाता है। लिखी हुई भाषा को पढ़ पाना और अपने विचारों और भावनाओं को लिखकर व्यक्त कर पाना- इन बुनियादी क्षमताओं के आधार पर ही आम लोग किसी को 'पढ़ा-लिखा' या शिक्षित मानते हैं। इन अपेक्षाओं के अतिरिक्त शिक्षित व्यक्ति से कुछ नैतिक और बौद्धिक अपेक्षाएँ भी होती हैं, लेकिन पढ़ने-लिखने की काबिलियत को लगभग बिना किसी विवाद के आम लोग शिक्षित व्यक्ति की बुनियादी काबिलियत मानते हैं। जाहिर है जब विद्यालयी तंत्र बड़ी संख्या में अपने विद्यार्थियों में ये बुनियादी क्षमताएँ विकसित नहीं कर पाता है तो उस तंत्र की विश्वसनीयता संकट में पड़ जाती है। इस समय हमारा विद्यालयी तंत्र कुछ ऐसे ही संकट से गुजर रहा है। साल-दर-साल सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ अपने आकलन की रिपोर्ट जारी करके बता रही हैं कि पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों को 'पढ़ने-लिखने' की जितनी क्षमता हासिल कर लेनी चाहिए बड़ी संख्या में विद्यार्थी वैसी क्षमता हासिल नहीं कर पा रहे हैं। नीति-निर्माताओं के बीच सीखने के जिस संकट (लर्निंग क्राइसिस) की चर्चा है उस संकट का एक सिरा विद्यालयी तंत्र की इस असफलता से जुड़ा है। मुश्किल यह है कि पिछले अनेक वर्षों से इस संकट को रेखांकित तो किया जा रहा है, लेकिन इसे समझने की बहुत व्यवस्थित कोशिश नहीं हो रही है। समझ की सीमा यह है कि पढ़ना-लिखना सीखने और सिखाने की एक यांत्रिक समझ हमारे सहज बोध में व्याप्त है। इसे आम तौर पर तकनीकी समस्या के रूप में देखा जाता है और उसका समाधान भी तकनीकी स्तर पर ही पेश किया जाता है, और प्रकट तौर पर यह किसी जटिल स्तर की तकनीकी चुनौती भी पेश करती हुई नजर नहीं आती। साफ तौर पर लोगों को दिखता है कि पढ़ना-लिखना सिखाना कोई रॉकेट साइन्स नहीं है। कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति किसी भी निरक्षर व्यक्ति को साक्षर बना सकता है। जब ऐसे तकनीकी समाधान देने में हम असफल होते हैं तब झुंझलाहट और बढ़ जाती है।

ऊपरी तौर पर भले ही हमें यह समस्या महज एक तकनीकी समस्या के तौर पर दिखती है, लेकिन इस समस्या का एक सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू भी है। पिछले बीस-तीस वर्षों में सरकारी प्रयासों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी विद्यालयी शिक्षा-तंत्र से जुड़े हैं और यह प्रसन्नता की बात है। बहुत बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे

विद्यालयी व्यवस्था से जुड़े हैं जो अपने परिवार के पहले व्यक्ति हैं जो शिक्षित होने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। स्कूली कक्षाएँ पहले की तुलना में अधिक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक हुई हैं। आज बहुभाषिकता महज एक वैचारिक टेक नहीं है, बल्कि हमारे अधिकांश विद्यालयी कक्षाओं की वस्तुस्थिति भी है। ऐसी स्थिति में या तो शिक्षक बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में देख सकते हैं या एक चुनौती के रूप में, लेकिन बहुभाषिकता की अनदेखी नहीं की जा सकती। अगर पढ़ना-लिखना सिखाने की जो प्रक्रिया है उसे जीवन्त बनाना है, पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में सीखने वाले की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करना है, अगर कक्षा में होने वाले संवाद को एकतरफा नहीं होना है तो हमें कक्षा में भाषाओं की विविधता को सहर्ष स्वीकार करना होगा। वैसे ही अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी सीखने के अलग-अलग तौर-तरीकों को लेकर कक्षा में आते हैं। क्या विद्यालयी तंत्र की ऐसी तैयारी है कि वह इस विविधता को अपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में समाहित करके उस प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बना सके। आमतौर पर जब नीतिगत स्तर पर विद्यार्थियों के पढ़ने-लिखने की अपेक्षित क्षमता हासिल नहीं कर पाने की चर्चा होती है तो इन प्रश्नों की अनदेखी की जाती है।

भाषा-शिक्षण की दृष्टि से ये प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। यह संगोष्ठी भाषा-शिक्षण से जुड़े मुद्दों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखकर उस पर विचार करने की जरूरत को रेखांकित करना चाहती है।

उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में भाषा और साहित्य का अध्यापन

भाषा-शिक्षण का मुद्दा विद्यालयी शिक्षा के हर स्तर और एकाधिक पहलुओं से जुड़ा हुआ है। मसलन अगर प्राथमिक कक्षा में हमारा भाषा-शिक्षण अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम है और विद्यार्थी प्राथमिक कक्षाओं से निकलकर स्वतंत्र ढंग से पढ़ना और लिखना सीख लेते हैं तो आखिर उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अलग से भाषा की कक्षा की आवश्यकता क्यों है। मान लें कि विद्यार्थी के घर की भाषा हिन्दी या उर्दू है और उसने सहज ढंग से सामाजीकरण के दौरान ये भाषाएँ अर्जित कर लीं हैं। तत्पश्चात स्कूल आकर उसने इन भाषाओं में स्वतंत्र ढंग से लिखना और पढ़ना प्राथमिक कक्षाओं में सीख लिया है, फिर इसके बाद उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर उसे हिन्दी या उर्दू क्यों पढ़ना चाहिए? अब आगे वह स्कूल में इन भाषाओं में ऐसी कौन-सी दक्षताएँ अर्जित करेगा जो वह सामान्य जीवन में इन भाषाओं को बरतते हुए अर्जित नहीं कर सकता? शिक्षाक्रम, पाठ्यपुस्तक लेखन से जुड़े शिक्षविदों और भाषा-शिक्षकों के पास इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर होने चाहिए।

वैसे तो शायद भाषा-शिक्षण में साहित्य का प्रयोग प्राथमिक कक्षाओं से ही होना चाहिए, लेकिन प्रायः हम देखते हैं कि उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में उर्दू और हिन्दी साहित्य के स्थापित लेखकों की रचनाओं से विद्यार्थियों को परिचित करवाने की पुरजोर कोशिश होती है। अलग-अलग विधाओं की रचनाएँ पाठ्यपुस्तकों में शामिल की जाती हैं। इन रचनाओं को पढ़ाकर हम किन लक्ष्यों को हासिल करना चाहते हैं? क्या हम इन्हें पढ़ाकर विद्यार्थियों को भाषा के कुछ कौशलों से लैस करना चाहते हैं, या उसे खास तरह की सांस्कृतिक विरासत से परिचित करवाना चाहते हैं या हम उसकी भावनात्मक, संज्ञानात्मक और सौन्दर्यबोधात्मक क्षमताओं के विस्तार का अवसर प्रदान करना चाहते हैं। अगर साहित्य पढ़ाने के पीछे कहीं न कहीं ये तीनों ही मकसद हैं तो शिक्षाक्रमों, पाठ्यपुस्तकों और शैक्षिक गतिविधियों में कब कौन-सा मकसद अधिक प्रभावी होकर हमारे शैक्षिक अभ्यास को दिशा देता है इसे समझना भाषा साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भाषा और साहित्य के अध्यापन से एक और प्रश्न जुड़ा हुआ है। क्या हिन्दी, उर्दू आदि भाषा के साहित्य के इतिहास में जो रचनाएँ समादृत होकर मानक बन चुकी हैं क्या वे उस भाषा-भाषी समुदाय के सभी सामाजिक वर्गों की संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं? शिक्षा के सार्वजनीकरण के बाद आज विद्यालयी कक्षाओं में जो विविधता है उस परिप्रेक्ष्य में इस प्रश्न पर विचार किया जाना चाहिए।

संगोष्ठी में भाग लेने के लिए कार्य-योजना

हम चाहते हैं कि संगोष्ठी में विविध तरह के पर्चे आएँ और अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोग इस संगोष्ठी के लिए पर्चा लिखें व उसे प्रस्तुत करें। संगोष्ठी के लिए पर्चे ऐसे शोध पत्र हों जो कि विषय क्षेत्र से सम्बन्धित हों। पर्चा आपके पढ़ाने, शिक्षकों के साथ आपकी अन्तर्क्रिया, प्रशिक्षण के आपके अनुभवों व इसी तरह के अनुभवों पर आधारित हो सकता है। अपेक्षा यह है कि पर्चा महज आपके मत अथवा समझ की अभिव्यक्ति न हो। अपने विचार को तार्किक आधार देने के लिए यह जरूरी है कि आपका आलेख प्रासंगिक शोध-साहित्य के व्यवस्थित विश्लेषणों और अपने ठोस अनुभवों व अवलोकनों के व्यवस्थित विश्लेषण पर आधारित हो। अगर आप शोधार्थी हैं और आपने भाषा-अध्ययन के क्षेत्र में शोध किया है तो आपसे व्यवस्थित शोध-पत्र की अपेक्षा है। आलेख में व्यवस्थित तरीके से उद्धरण दिए जाएँ और सन्दर्भ सूची में प्रत्येक उद्धरण के बारे में विस्तृत ब्योरा हो।

ऊपर दिए गए परिप्रेक्ष्य में हमने संगोष्ठी के लिए कुछ मुद्दों को सूचीबद्ध किया है। आप इनमें से किसी भी मुद्दे पर आप अपना शोध-पत्र, शोध-अध्ययन शोध आलेख हमें भेज सकते हैं :

1. प्राथमिक कक्षाओं में भाषा-शिक्षण

- भाषा-शिक्षण की शुरुआत : साक्षरता, अर्थग्रहण और भाषिक अभिव्यक्ति का बढ़ता दायरा
- प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण में समावेशन के मसले
- भाषा-शिक्षण और आरम्भिक साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ
- प्राथमिक कक्षाओं में भाषा-शिक्षण के लिए उपयुक्त पाठ्यचर्या सामग्रियों और गतिविधियाँ का चयन और निर्माण
- भाषा-शिक्षण और कक्षा में बहुभाषिकता
- ब्रेल लिपि और सांकेतिक भाषा
- 'भाषाई असमर्थता' और 'भाषाई निपुणता' जैसे पदों का आलोचनात्मक विश्लेषण

2. उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में भाषा-शिक्षण

- उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा के अध्यापन के लिए पाठ्यक्रम-निर्धारण की चुनौतियाँ
- साहित्यिक विधाओं का अध्यापन
- अकादमिक लेखन की तैयारी
- साहित्यिक और अकादमिक पाठों को पढ़ने की तैयारी

3. पाठ्यक्रम के सभी क्षेत्रों में शैक्षिक उपलब्धि के लिए भाषा-शिक्षण

- भाषा, ज्ञानार्जन और विचारशीलता
- भाषा और सर्जनात्मक अभिव्यक्तियाँ
- उर्दू और हिन्दी में बाल साहित्य
- हिन्दी-उर्दू भाषा में विज्ञान शिक्षण
- हिन्दी-उर्दू भाषा में समाज विज्ञान का शिक्षण
- भाषिक क्षमता और गणित का ज्ञान

4. भाषा और साहित्य के अध्यापन से जुड़े कुछ मुद्दे

- मानक भाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा या जनभाषा
- भाषा, लिपि और लिखित संवाद
- शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी और उर्दू के स्वरूप पर बहस

- स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी और उर्दू साहित्य : सांस्कृतिक मानदण्ड, पाठों का चयन और प्रचलित शिक्षण विधि
- हिन्दी और उर्दू साहित्य के अध्यापन के व्यापक उद्देश्य
- मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का अध्यापन : पाठ्यक्रम में मध्यकालीन साहित्य को शामिल करने के व्यापक उद्देश्य और प्रचलित शिक्षण-विधि
- आधुनिक हिन्दी और उर्दू साहित्य का अध्यापन : अध्यापन के व्यापक उद्देश्य और प्रचलित शिक्षण-विधि
- अध्यापक-शिक्षा में भाषा के अध्यापन से जुड़े मुद्दे
- अध्यापक शिक्षा में भाषा और ज्ञान-निर्माण से जुड़े मुद्दे

संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आपको अपने प्रस्तावित शोध आलेख का एक 'एब्सट्रैक्ट' भेजना होगा। 'एब्सट्रैक्ट' से यहाँ आशय है कि आपके आलेख के मुख्य बिन्दु क्या होंगे, अपनी बात को पुख्ता रूप से रखने के लिए आपके अवलोकन और तर्क की पुष्टि के लिए या ध्यान आकर्षित करने के लिए आप कौन-से साहित्य व शोध प्रविधि का सहारा लेंगे, और इन सबसे आप किन बातों की स्थापना करना चाहेंगे।

यह संगोष्ठी हिन्दी और उर्दू में हो रही है। यानी इसके लिए लिखे जाने वाले आलेख इन दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकते हैं। संगोष्ठी में इनका प्रस्तुतिकरण और उन पर चर्चा भी सम्बन्धित भाषा में ही होगी।

आप अपने प्रस्तावित पर्चे का एब्सट्रैक्ट **15 फरवरी, 2020** तक भेज सकते हैं। एब्सट्रैक्ट 500 से 800 शब्दों तक का हो सकता है। एब्सट्रैक्ट हिन्दी या उर्दू में लिखे जा सकते हैं। कृपया 'एब्सट्रैक्ट' के अन्त में अपना संक्षिप्त परिचय, इमेल, पता तथा फ़ोन नम्बर का उल्लेख अवश्य करें। साथ ही जहाँ तक सम्भव हो 'एब्सट्रैक्ट' वर्ड फाइल में यूनिकोड में टाइप करके भेजें। अपनी फाइल की एक पीडीएफ भी भेजें।

कृपया हिन्दी में लिखे एब्सट्रैक्ट seminar.hindiurdu@gmail.com पर भेजें।

कृपया उर्दू में लिखे एब्सट्रैक्ट seminar.urduhindi@gmail.com पर भेजें।

एब्स्ट्रैक्ट प्राप्त होने पर संगोष्ठी की अकादमिक समिति उस पर विमर्श के बाद अपनी स्वीकृति ईमेल के माध्यम से आपको भेजेगी। स्वीकृति मिलने के बाद आप अपना पूर्ण आलेख लिखना आरम्भ कर सकते हैं। पूर्ण आलेख भी उक्त ईमेल पत्तों पर ही भेजा जाना है।

संगोष्ठी आयोजन तिथि : 9, 10 और 11 अक्टूबर, 2020

आयोजन स्थल : जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली

एब्स्ट्रैक्ट भेजने की अन्तिम तिथि : 15 फरवरी, 2020

पूर्ण आलेख भेजने की अन्तिम तिथि : 31 मई, 2020

और अधिक जानकारी के लिए दिए हुए ईमेल पत्तों पर सम्पर्क कर सकते हैं।



جامعہ ملیہ اسلامیہ
جامیہا میللیا اسلامیہ



Azim Premji
University

تعلیم کے سروکار-4

تصوراتی خاکہ

(Concept Note)

زبان کی تدریس، غور و فکر اور تخلیقی صلاحیتیں

اسکول کی تعلیم میں زبان و ادب کی تعلیم پر سیمینار

11 تا 19 اکتوبر 2020ء، نئی دہلی

تعلیم کے سروکار اسیریز کا چوتھا تین روزہ سیمینار 11 تا 19 اکتوبر 2020ء کو جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی میں منعقد کیا جائے گا۔ یہ سیمینار ڈپارٹمنٹ آف ٹیچرز ٹریننگ اینڈ نان فارمل ایجوکیشن (آئی۔ اے۔ ایس۔ ای)، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی اور عظیم پریم جی یونیورسٹی کی مشترکہ سرپرستی میں ہوگا اور جامعہ ملیہ اسلامیہ کے قیام کی صد سالہ جشن کی تقریبات کا ایک حصہ بنے گا۔ سیمینار زبان کی تدریس کے موضوع پر مبنی اور تخلیقی صلاحیتوں جیسے عناوین پر مشتمل ہے۔ سیمینار میں مکالمہ اور بحث و مباحثہ کے ذریعہ اردو اور ہندی ہوگا۔

سیمینار سیریز کا پس منظر

پچھلی کچھ دہائیوں میں ملک کی بہت سی یونیورسٹیوں میں اسکولی تعلیم کے اصولوں اور طریقوں پر منحصر علمی بحث و مباحثہ کے انعقاد کے لیے بہت سارے جامع اقدامات کیے گئے ہیں۔ ان میں نئے پروگراموں کی تشکیل اور موجودہ نصابوں پر نظر ثانی بھی شامل ہے۔ ہمارا یہ ماننا ہے کہ اس طرح کے پروگراموں کے انعقاد سے اسکول کی تعلیم سے متعلق مسائل سے معاشرے میں بیداری آئے گی۔ لیکن ساتھ ہی ان پروگراموں کے معیار کو بہتر کرنے اور انہیں مزید شمولیاتی اور جامع بنانے کے لیے ان کو ہندوستانی زبانوں میں متعارف کرانا بھی ضروری ہے۔ یہ امر انتہائی اہمیت کا حامل ہے کہ ہندوستانی زبانوں میں علمی بحث و مباحثہ کے ساتھ ساتھ علمی ادب کی تخلیق بھی کی جانی چاہیے۔ سیمینار کا انعقاد اسی سمت میں ایک چھوٹی سی کوشش ہے جس میں پیش کیے جانے والے علمی اور تحقیقی مقالے ہندوستانی زبانوں میں ہوں اور ان پر ہندوستانی زبانوں میں ہی گفتگو ہونی چاہیے۔

عظیم پریم جی یونیورسٹی نے انواد پہل پروگرام کے تحت دوسرے شراکت داروں کے ساتھ مل کر اس طرح کے سیمینار منعقد کرنے کا سلسلہ شروع کیا ہے۔ انواد پہل 'ٹیم کا کام عظیم پریم جی یونیورسٹی کے مقاصد اور وژن پر مرکوز ہے جس میں مختلف معاشرتی اور معاشی پس منظر سے تعلق رکھنے والے طلباء کی ایک بڑی تعداد کو معیاری اعلیٰ تعلیم اور پڑھنے کا مواد فراہم کرنا ہے۔ ہم سمجھتے ہیں کہ ہندوستانی زبانوں میں معیاری مواد کی دستیابی اور معیاری اعلیٰ تعلیمی پروگرام ہونے سے تصورات اور نظریات کو فروغ حاصل ہو گا۔ ان سیمیناروں میں پیش کیے جانے والے منتخب علمی اور تحقیقی مقالوں کو کتاب کی شکل میں شائع کرنے کا بھی منصوبہ ہے تاکہ وسیع پیمانے پر ان کی اشاعت کی جاسکے۔ پہلے سیمینار سے منتخب کیے جانے والے مقالات کی دو تالیفیں زیر طبع ہیں۔

اس حوالے سے ابھی تک تین سیمینار منعقد کیے جا چکے ہیں جن کی علمی و ادبی دنیا میں زبردست پذیرائی ہوئی ہے۔ پہلا سیمینار 2017 میں دہلی میں امبیڈ کر یونیورسٹی، دہلی کے ساتھ "اسکولی تعلیم کے بدلتے ہوئے تناظر میں درس و تدریس کا خاکہ" کے موضوع پر منعقد ہوا تھا۔ دوسرا سیمینار موبالی میں 2018 میں انڈین سائنس ایجوکیشن اینڈ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ، موبالی کے ساتھ "سائنس اور سائنسی تعلیم" کے موضوع پر اور تیسرا سیمینار فیکلٹی آف ایجوکیشن، دہلی یونیورسٹی، دہلی کے ساتھ "ریاضی کی تعلیم: توقعات اور چیلنجز" کے عنوان سے متعلق منعقد ہوا تھا۔

زبان کی تدریس

زبان کو انسان، ثقافت، معاشرے کی تخلیق اور نشوونما کی اساس سمجھا جاتا ہے۔ یہ بات بھی واضح ہے کہ زبان ان سب سے مختلف نہیں ہے بلکہ ان سب میں پیوست ہے۔ ان سب کے تناظر اور سیاق اگرچہ مختلف ہیں لیکن ایک دوسرے سے مربوط بھی ہیں۔ زبان کے بغیر ہم نہ انسانوں پر بحث کر سکتے ہیں اور نہ ہی معاشرے اور ثقافت پر۔ جب بھی زبان کی بات ہوگی، ان کے بارے میں بھی کی جائے گی۔ دوسرے لفظوں میں یہ معاشرے اور ثقافت کو تشکیل دیتی ہے اور خود بھی اس کے تشکیل پاتی ہے۔ کچھ ماہرین کا خیال ہے کہ زبان نہ صرف انسانی افکار کی نشوونما کی بنیاد ہے بلکہ انسانی افکار کو وجود میں بھی لاتی ہے اور اس کے بغیر انسانی فکر ممکن نہیں ہے۔

تعلیم کی ہر سطح پر زبان مرکزی اور خصوصی اہمیت کی حامل ہے۔ غور کرنا، اپنے خیالات کو مہمیز کرنا، ان کو مختلف طریقوں سے وسعت دینا، ان سب کے لیے زبان ضروری ہے۔ اس بات کے کافی شواہد موجود ہیں کہ بچے اپنی زبان یعنی وہ زبان جس کا اکتساب انھوں نے اپنے گھر اور سماجی ماحول میں کیا ہے، اس میں وہ ہر طرح کی بات چیت اور غور و فکر کی صلاحیت رکھتے ہیں۔ یہ بھی مانا جاتا ہے کہ وہ اس زبان میں تصورات کی پختہ اور بہتر تفہیم کے بھی اہل ہیں۔ تدریسی عمل، جو ان کی اپنی زبان اور ثقافت کے تناظر میں انجام دیا گیا ہے اس کے لیے ضروری اعتماد کو فروغ دیتا ہے۔

تعلیم کے سلسلے میں یہ بھی کہا جاتا ہے کہ زبان صرف اظہار اور تعلیم یافتہ ہونے کے ایک وسیلے سے زیادہ ہوتی ہے۔ یہ نہ صرف دنیا اور افکار کو سمجھنے کا ذریعہ ہے بلکہ ہر انسان کی شناخت، وقار اور شخصیت کی تشکیل کا ایک وسیلہ بھی ہے۔ اس فکر کو ہر سطح کی زبان کی تدریس کے مقاصد، تدریس کے طریقہ کار، بچوں اور اساتذہ کے رول، درجہ کی تشکیل اور دیگر مضامین کی تعلیم میں زبان کے کردار سے متعلق سوالات کے بارے میں بروئے کار لانا ضروری ہے۔

قومی درسیات کا خاکہ (این سی ایف) 2005 اور 'ہندوستانی زبانوں کی تدریس' پر پوزیشن پیپر زبان اور زبان کی تدریس کے بارے میں ایک ہی نقطہ نظر رکھتے ہیں۔ ان ہی بنیادوں پر زبان کے تدریسی کورس، طریقہ تدریس، درسی کتب اور متعلقہ کتب کو تیار کرنا اور ان کی درجے میں جگہ، اساتذہ کی تیاری، اندازہ قدر کے طریقے وغیرہ کی تشکیل ہوئی ہے۔ ہندوستان کے کثیر لسانی منظر نامے میں جمہوری شمولیاتی تعلیم کے لیے زبان، ثقافت اور معاشرے کی تعلیم کے باہمی تعلقات خاص اہمیت رکھتے ہیں جن کو گہرائی کے ساتھ سمجھنا ضروری ہے۔ یہ سیمینار اس سمت میں پیش رفت کی ایک کوشش ہے۔

اس بحث کے دوران باہمی رشتوں کے نئے پہلوؤں کو ابھارنے کے لیے لازمی ہے کہ ان کے سلسلے میں نئی نئی کوششیں کی جائیں اور ان کے مطالعے، تجزیے اور اس سے حاصل شدہ نتائج اخذ کر کے اس تفہیم کو مزید آگے بڑھایا جائے۔ گزشتہ تین چار دہائیوں میں زبان کی تدریس کے حوالے سے بہت سی نئی کوششیں اور تجربات کیے گئے ہیں۔ ایک طرف یہ کوششیں نظریاتی سطح پر کی گئی ہیں اور دوسری طرف اسکولوں، کمرہ جماعت اور ان کے وسائل کے ساتھ بہت ساری چھوٹی بڑی کوششیں کی گئیں ہیں۔ اس سیمینار میں ہم ان سب پر تبادلہ خیال کرنا چاہتے ہیں۔

پرائمری درجات میں زبان کی تعلیم

اسکول میں ہم لکھنا پڑھنا سیکھتے ہیں۔ عام بول چال کی زبان تو بچے گھر بیٹا اور معاشرتی زندگی گزارتے ہوئے بھی سیکھ لیتے ہیں، لیکن پڑھنا لکھنا سیکھنے کے لیے منظم کوششیں اور اسکول جیسے ادارے کی ضرورت ہوتی ہے۔ اسکول کی تعلیم، بالخصوص پرائمری تعلیم کے بارے میں یہ عام تصور ہے۔ تعلیم یافتہ فرد کو عام زبان میں 'پڑھا لکھا' شخص کہا جاتا ہے۔ تحریری زبان کو پڑھ پانے اور اپنے خیالات کو لکھ کر ظاہر کر پانے کی بنیادی صلاحیتوں کی بنا پر عام لوگ کسی کو پڑھا لکھا یا تعلیم یافتہ مانتے ہیں۔ ان توقعات کے علاوہ تعلیم یافتہ شخص سے کچھ اخلاقی اور فکری توقعات وابستہ ہیں

لیکن پڑھنے لکھنے کی صلاحیت کو بغیر کسی اختلاف کے تقریباً تمام لوگ پڑھے لکھے شخص کی بنیادی قابلیت سمجھتے ہیں۔ ظاہر ہے، جب اسکولی نظام بڑی تعداد میں اپنے طلباء میں یہ بنیادی صلاحیتیں فروغ دینے میں ناکام رہتا ہے تو پھر اس نظام کی معتبریت خطرے میں پڑ جاتی ہے۔ اس وقت ہمارا اسکولی نظام کچھ اس طرح کے بحران سے گزر رہا ہے۔ سال بہ سال سرکاری اور غیر سرکاری تنظیمیں اپنی تشخصی رپورٹ جاری کر رہی ہیں جن میں کہا گیا ہے کہ پانچویں جماعت کے طلباء میں پڑھنے لکھنے کی جتنی صلاحیت پیدا ہونی چاہیے طلباء کی ایک بڑی تعداد اس صلاحیت کے حصول میں ناکام ہے۔ پالیسی سازوں کے مابین سیکھنے کے جس بحران کا ذکر ہے، اس کا ایک سر اسکولی نظام کی اس ناکامی سے وابستہ ہے۔ مشکل یہ ہے کہ پچھلے کئی سالوں سے اس بحران کی نشاندہی کی جا رہی ہے لیکن اس کو سمجھنے کے لیے منظم کوشش نہیں کی جا رہی ہے۔ سمجھ کا عالم یہ ہے کہ پڑھنا لکھنا سیکھنے اور سکھانے کی ایک میکانیکی سمجھ ہماری جبلتوں میں موجود ہے۔ اسے عام طور پر ایک تکنیکی مسئلے کے طور پر دیکھا جاتا ہے اور تکنیکی طور پر ہی اس کا حل بھی پیش کیا جاتا ہے اور بظاہر ایسا لگتا ہے کہ وہ کسی پیچیدہ سطح کی تکنیکی چیلنج پیش کرتی ہوئی نظر نہیں آتی ہے۔ اس سے لوگوں کو یہ ظاہر ہوتا ہے کہ پڑھنا لکھنا سکھانا کوئی راکٹ سائنس نہیں ہے۔ کوئی بھی پڑھا لکھا فرد کسی بھی ناخواندہ شخص کو خواندہ بنا سکتا ہے۔ جب ہم اس طرح کے تکنیکی حل مہیا کرنے میں ناکام ہو جاتے ہیں، تب جھنجھلاہٹ اور بڑھ جاتی ہے۔

سطحی طور پر بھلے ہی ہمیں یہ مسئلہ محض ایک تکنیکی مسئلے کے طور پر دکھائی دیتا ہے لیکن اس مسئلے کا ایک سماجی و ثقافتی پہلو بھی ہے۔ گزشتہ بیس تیس برسوں میں سرکاری کالجوں سے مختلف معاشرتی، ثقافتی اور لسانی پس منظر کے طلباء اسکولی تعلیمی نظام سے وابستہ رہے ہیں اور یہ خوشی کی بات ہے۔ ایسے بچوں کی ایک بڑی تعداد اسکولی نظام سے وابستہ ہے جو اپنے خاندان کے پہلے فرد ہیں جو تعلیم یافتہ بننے کی سمت قدم اٹھا رہے ہیں۔ اسکول کے درجات پہلے کی نسبت کثیر لسانی اور کثیر ثقافتی ہو چکے ہیں۔ آج لسانی تکثیریت صرف نظریاتی معاملہ ہی نہیں ہے بلکہ ہمارے بیشتر اسکولوں کے کمرہ جماعت کی حقیقت بھی ہے۔ ایسی صورت حال میں اساتذہ لسانی تکثیریت کو وسیلے کے طور پر یا ایک چیلنج کے طور پر دیکھ سکتے ہیں لیکن لسانی تکثیریت کو نظر انداز نہیں کیا جاسکتا۔ اگر پڑھنا لکھنا سکھانے کے عمل کو موثر بنانا ہے تو اس عمل میں آموزگار کی فعال شرکت کو یقینی بنانا ہوگا۔ اگر کمرہ جماعت میں مکالمہ یک طرفہ نہیں کرنا ہے تو ہمیں کمرہ جماعت میں زبانوں کے تنوع کو بخوشی قبول کرنا پڑے گا۔ مختلف ثقافتی پس منظر سے آنے والے طلباء و طالبات سیکھنے کے مختلف طریقوں کے ساتھ کمرہ جماعت میں آتے ہیں۔ کیا اسکولی نظام کی ایسی تیاری ہے کہ وہ اس تنوع کو اپنے سیکھنے سکھانے کے عمل میں شامل کر کے اس عمل کو بامقصد بنا سکے۔ عام طور پر جب پالیسی کی سطح پر طلباء و طالبات میں پڑھنے لکھنے کی متوقع صلاحیت حاصل نہ کر پانے کی بات ہوتی ہے تو ان سوالات کو نظر انداز کیا جاتا ہے۔

زبان کی درس و تدریس کے نقطہ نظر سے یہ سوالات اہم ہیں۔ یہ سیمینار زبان کی تدریس سے متعلق اہم امور کو وسیع تر تناظر میں غور کرنے کی ضرورت کی نشاندہی کرنا چاہتا ہے۔

اعلیٰ پرائمری اور ثانوی جماعتوں میں زبان و ادب کی تعلیم

زبان کی تدریس کا مسئلہ اسکول کی تعلیم کی ہر سطح اور متعدد پہلوؤں سے تعلق رکھتا ہے۔ مثال کے طور پر، اگر پرائمری درجات میں ہماری زبان کی تدریس اپنے مقاصد کی تکمیل کے لائق ہو اور طلباء و طالبات پرائمری درجات سے نکل کر خود بخود پڑھنا لکھنا سیکھ لیتے ہیں، تو پھر یہاں پرائمری اور ثانوی سطح پر علاحدہ طور پر زبان کی کلاس کی ضرورت کیوں ہے؟ فرض کیجیے کہ طالب علم کی گھر کی زبان اردو یا ہندی ہے اور اس نے آسانی سے اپنے سماج میں رہتے ہوئے یہ زبان سیکھ لی ہے، اسکول آنے کے بعد اس نے پرائمری درجات میں ان زبانوں میں آزادانہ طور پر لکھنا اور پڑھنا بھی سیکھ لیا ہے تو اس کے بعد اس کو اعلیٰ پرائمری اور ثانوی سطح پر اردو یا ہندی کیوں پڑھنا چاہیے؟ اب مزید وہ ان زبانوں میں اسکول میں کون سی مہارت حاصل کرے گا جو وہ عام زندگی میں ان زبانوں کو استعمال کرتے ہوئے حاصل نہیں کر سکتا؟ تعلیمی عمل، درسی کتاب لکھنے سے تعلق رکھنے والے ماہرین تعلیم اور زبان کے اساتذہ کے پاس ان سوالات کے واضح جوابات ہونے چاہئیں۔

اگرچہ زبان کی تعلیم میں ادب کا استعمال پرائمری درجات سے ہی کیا جانا چاہیے لیکن اکثر و بیشتر ہم دیکھتے ہیں کہ اعلیٰ پرائمری اور ثانوی درجات میں طلباء و طالبات کو اردو اور ہندی ادب کے ممتاز مصنفین کی تصانیف سے متعارف کرانے کی بھرپور کوشش کی جاتی ہے۔ درسی کتب میں مختلف اصناف کی تحریریں شامل ہوتی ہیں۔ ان تحریروں کو پڑھا کر ہم کون سے مقاصد حاصل کرنا چاہتے ہیں؟ کیا ہم انھیں پڑھا کر طلباء و طالبات میں زبان کی کچھ مہارتوں سے واقفیت حاصل کرنا چاہتے ہیں یا کسی خاص ثقافتی ورثے سے ان کو متعارف کرانا چاہتے ہیں یا پھر ہم ان کی جذباتی، علمی، اور جمالیاتی فہم اور صلاحیتوں کو فروغ دینے کے مواقع فراہم کرنا چاہتے ہیں؟ اگر یہ تینوں محرکات ادب کی تعلیم کے پیچھے شامل ہیں تو ہماری تعلیم، درسی کتب اور تعلیمی سرگرمیوں میں کب کون سا مقصد زیادہ اثر دار ہو کر ہمارے تعلیمی عمل کی زیادہ رہنمائی کرتا ہے اسے سمجھنا زبان و ادب کے نقطہ نظر سے اہم ہے۔ زبان و ادب کی تدریس سے ایک اور سوال وابستہ ہے کہ کیا اردو ہندی کے ادب کی تاریخ میں جو تصنیفات معیار بن چکی ہیں وہ اس زبان کو بولنے والی قوم کے سبھی طبقات کی نمائندگی کرتی ہیں۔ تعلیم کے آفاقی ہونے کے بعد آج اسکول کے کمرہ جماعت میں پائے جانے والے تنوع کے تناظر میں اس سوال پر غور کیا جانا چاہیے۔

سیمینار میں شرکت کا لائحہ عمل

ہم چاہتے ہیں کہ اس سیمینار میں طرح طرح کے علمی اور تحقیقی مقالے آئیں اور مختلف پس منظر کے لوگ اس سیمینار کے لیے تحقیقی مقالے لکھیں اور پیش کریں۔ سیمینار میں پیش کرنے کے لیے مقالے ایسی تحقیقات پر مبنی ہوں جو سیمینار کے موضوعات سے متعلق ہوں۔ مقالہ آپ کی تدریس، اساتذہ کے ساتھ آپ کے باہمی تعامل، آپ کے تعلیمی و تربیتی تجربات اور اس طرح کے دوسرے تجربات پر مبنی ہو سکتا ہے۔ توقع یہ ہے کہ یہ مقالہ محض آپ کی رائے یا فہم کا اظہار نہ ہو بلکہ اپنے خیالات کو منطقی بنیاد دینے کے لیے ضروری ہے کہ آپ کا مقالہ متعلقہ تحقیقی ادب کے تحلیل و تجزیہ اور آپ کے پختہ تجربات اور مشاہدات پر مبنی ہو۔ اگر آپ محقق ہیں اور زبان کی تعلیم کے شعبے میں آپ نے تحقیق کی ہے، تو ہم

آپ سے ایک منظم اور وسیع مقالے کی توقع کرتے ہیں۔ مقالہ ایک منظم انداز میں پیش کیا جانا چاہیے اور حوالہ جات کی فہرست میں ہر ایک کے بارے میں تفصیلات ہونی چاہئیں۔ مذکورہ بالا تناظر کو مد نظر رکھتے ہوئے ہم نے درج ذیل موضوعات کی نشاندہی کی ہے جن پر آپ اپنا علمی اور تحقیقی مقالہ ارسال کر سکتے ہیں۔

پرائمری درجات میں زبان کی تدریس

☆ زبان کی تدریس کا آغاز: خواندگی، تفہیم اور لسانی اظہار کا وسیع ہوتا دائرہ

☆ ابتدائی سطح پر زبان کی تدریس میں شمولیت کے مسائل

☆ زبان کی تدریس اور ابتدائی ادبی اظہار

☆ پرائمری درجات میں زبان کی تدریس کے لیے مناسب مواد اور سرگرمیوں کا انتخاب اور تخلیق

☆ درجات میں زبان کی تدریس اور لسانی تکثیریت

☆ بریل رسم الخط اور اشارے کی زبان

☆ 'لسانی معذوریت' اور 'لسانی مہارت' جیسی اصطلاحات کا تنقیدی تجزیہ

اعلیٰ پرائمری اور ثانوی درجات میں زبان کی تدریس

☆ اعلیٰ ابتدائی اور ثانوی سطح پر درجہ زبان کی تدریس کے لیے نصاب تشکیل دینے میں درپیش چیلنج

☆ ادبی اصناف کی تدریس

☆ علمی اور تخلیقی تحریروں کی صلاحیتوں کا فروغ

☆ ادبی اور علمی اسباق پڑھنے کی تیاری

نصاب کے سبھی شعبوں میں تعلیمی کامیابی کے لیے زبان کی تدریس

☆ زبان، علمی حصول یابی اور غور و خوض

☆ زبان اور تخلیقی اظہار

☆ اردو زبان میں بچوں کا ادب

☆ اردو زبان میں سائنس کی تدریس

☆ ہندی اور اردو زبان میں سماجی علوم کی تدریس

☆ لسانی اہلیت اور یا ضی کا علم

☆ زبان و ادب کی تدریس 4

☆ معیاری زبان، قومی زبان، رابطے کی زبان

☆ زبان، رسم الخط اور تحریری موصلات

☆ تدریس کے وسیلے کے طور پر اردو اور ہندی کی ہیئت اور ساخت پر بحث

☆ اسکول کے نصاب میں اردو اور ہندی ادب: ثقافتی معیار، اسباق کا انتخاب اور مقبول طرق تدریس

☆ اردو اور ہندی ادب کی تعلیم کے وسیع تر مقاصد

☆ قرون وسطیٰ کا لسانی منظر نامہ اور زبان کی تدریس

☆ جدید اردو اور ہندی ادب کی تدریس: درس و تدریس کے وسیع مقاصد اور موجودہ طرق تدریس و تدریسی حکمت عملیاں

☆ اساتذہ کی تعلیم میں زبان کی تدریس سے متعلق مسائل

☆ اساتذہ کی تعلیم میں زبان اور علم کی تشکیل سے متعلق مسائل

سیمینار میں شریک ہونے کے لیے آپ کو اپنے مجوزہ تحقیقی مقالے کی تلخیص بھیجنا ہوگی۔ یہاں تلخیص کا مفہوم یہ ہے کہ آپ اپنے مقالے کے کلیدی نکات، مشاہدے اور دلیل کی تصدیق کرنے یا اپنے نقطہ نظر کی طرف توجہ مبذول کرانے کے لیے کون سا ادب اور تحقیقی طریقہ استعمال کریں گے۔ اور آپ ان سب کی مدد سے کیا ثابت کرنا چاہتے ہیں۔

یہ سیمینار اردو اور ہندی میں ہو رہا ہے۔ یعنی اس کے لیے لکھے گئے سبھی علمی اور تحقیقی مقالے ان دونوں زبانوں میں کسی ایک میں ہو سکتے ہیں۔

سیمینار میں ان کی پیش کش اور گفتگو بھی متعلقہ زبان میں ہی کی جائے گی۔

☆ آپ اپنے مجوزہ مقالے کی تلخیص 20/ جنوری 2020 تک بھیج سکتے ہیں۔ تلخیص 500 سے 800 الفاظ تک ہو سکتی ہے۔

☆ آپ کو جس زبان میں مقالہ پیش کرنا ہو، اسی زبان میں تلخیص تحریر کر کے ارسال کریں۔

☆ آپ سے گزارش ہے کہ تلخیص کے اختتام پر اپنا مختصر تعارف، ای میل، پتہ اور فون نمبر تحریر کریں۔

☆ تلخیص اردو ایم۔ ایس۔ ورڈ، پی۔ ڈی۔ ایف۔ یا ان پیج میں متعلقہ زبان میں ہی ارسال کریں۔

☆ سیمینار میں اردو میں پیش کیے جانے والے مقالے کی تلخیص اس ای میل پر بھیجیں

seminar.urduhindi@gmail.com

☆ سیمینار میں ہندی میں پیش کیے جانے والے مقالے کی تلخیص اس ای میل پر بھیجیں

seminar.hindiurdu@gmail.com

☆ مقالے کی تلخیص موصول ہونے پر سیمینار کی اکیڈمک کمیٹی اس پر تبادلہٴ خیال کرنے کے بعد آپ کو مطلع کرے گی۔ منظوری ملنے کے بعد آپ

مقالہ لکھنا شروع کر سکتے ہیں۔ پورا مقالہ مع حوالہ جات مذکورہ بالا ای میل ایڈریس پر ارسال کیا جانا چاہیے۔

2020 / 11, 10, 9 اکتوبر	سیمینار کی تاریخ
110025 نئی دہلی - جامعہ ملیہ اسلامیہ	مقام
15 فروری 2020	تلخیص ارسال کرنے کے آخری تاریخ
31 مئی 2020	پورا مقالہ جمع کرانے کی آخری تاریخ

نوٹ: سیمینار سے متعلق مزید معلومات حاصل کرنے کے لیے آپ دیے گئے ای میل پتوں پر رابطہ کر سکتے ہیں۔